

वनस्पति

A. वन नीतियाँ

B. वन गणना

C. वनों का वर्गीकरण

D. प्रमुख वन सम्पदा एवं घास

E. वानिकी कार्यक्रम

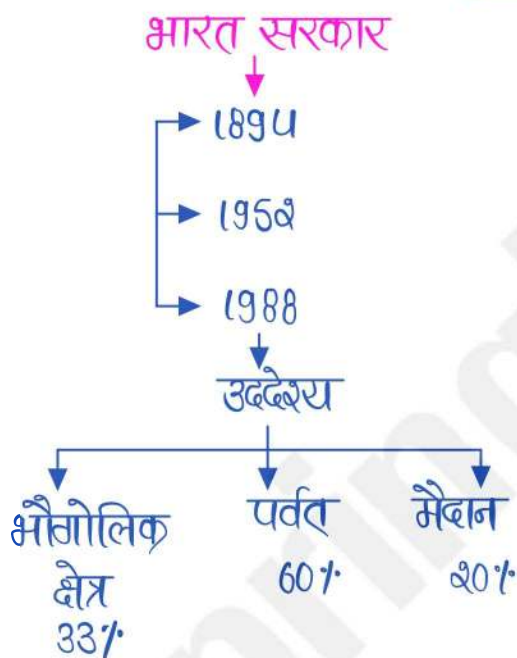
F. वानिकी व पर्यावरण संबंधी पुरस्कार

G. प्रमुख अधिनियम एवं परियोजनाएँ

H. वानिकी व पर्यावरण संबंधी दिवस

I. अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु / तथ्य

वन नीतियाँ



वनगणना

• **संस्थान** - वन सर्वेक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, देहरादून (उत्तराखण्ड)

• **समय** - प्रति दो वर्ष में एक बार

↳ प्रथम वनगणना = 1987

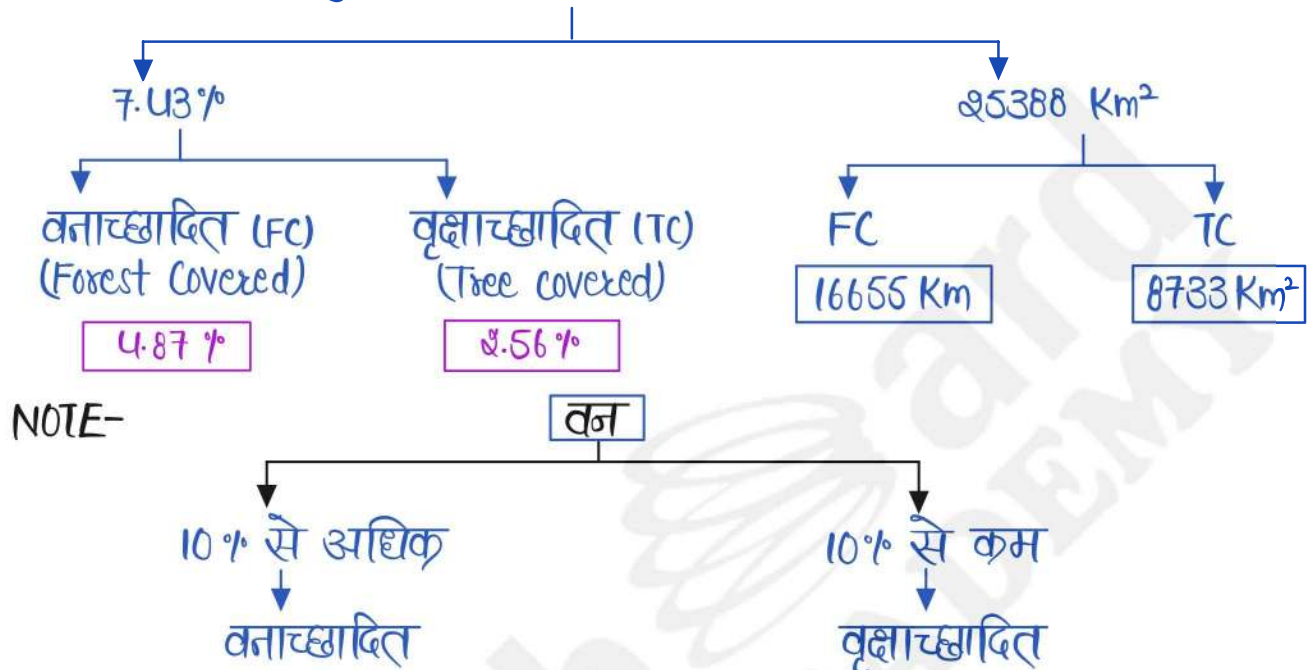
↳ 2007 में वनगणना जारी नहीं हुई।

नवीतम - 2021 (17वीं)

17 वीं वनगणना-२०२१ (ISFR) के अनुसार-

[ISFR= Indian State forest Report]

राजस्थान में कुल वन (२०२१)



*17 वीं वनगणना २०२१ के अनुसार सर्वाधिक वन-

क्षेत्रफल	प्रतिशत (%)
1. उदयपुर - 2753 Km ²	1. उदयपुर - 23.49%
2. अलवर - 1196 Km ²	2. प्रतापगढ़- 23.24%
3. प्रतापगढ़- 1034 Km ²	3. सिरोही - 17.49%
4. वाराण - 1010 Km ²	4. करौली - 15.28%

*17 वीं वनगणना २०२१ के अनुसार न्यूनतम वन-

क्षेत्रफल ↓	प्रतिशत (%) ↓
चुरु - 78 Km ²	जोधपुर - 0.48 %
हनुमानगढ़- 93 Km ²	चुरु - 0.56 %
जोधपुर - 109 Km ²	जैसलमेर- 0.84 %
श्रीगंगानगर- 115 Km ²	बीकानेर - 0.95 %

NOTE- राजस्थान में अभिलेखित वन-

प्रतिशत
↓
9.61%

क्षेत्रफल
↓
32864 (कि.मी)² = 2021-22
32869 (कि.मी)² = 2022-23
32921 (कि.मी)² = 2023-24

* ISFR-2023 Report (18 वीं वनगणना) -

↳ Report आने के बाद स्वयं करंट से Update करें।
Website- 'Forest Survey of India.'

वनों का वर्गीकरण

कानूनी/प्रशासनिक वर्गीकरण

भौगोलिक वर्गीकरण

1. कानूनी/प्रशासनिक वर्गीकरण-

राज्य वन अधिनियम 1953 के अनुसार इन वनों को तीन भागों में बाँटा गया है -

आरक्षित वन

लकड़ी काटना, पशुचारण एवं शिकार पर पूर्ण प्रतिबंध

संरक्षित/रक्षित वन

लकड़ी काटना, पशुचारण की सीमित छूट

अवर्गीकृत वन

कोई प्रतिबंध नहीं

➤ सर्वाधिक - उदयपुर
36.99%

बारां
56.51%

बीकानेर
6.50%

2. भौगोलिक वर्गीकरण-

राजस्थान में भौगोलिक वनों का वर्गीकरण सामान्यतः 5 भागों में किया जाता है।

➤ इस वर्गीकरण का मुख्य आधार = वर्षा, तापमान व उच्चावच है।

उपोष्ण सदावहार वन

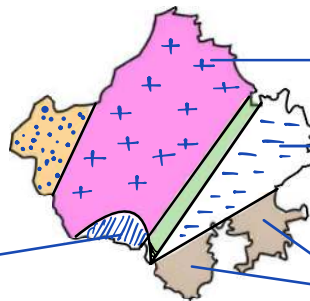
उष्ण सागवान वन

उष्ण शुष्क मानसूनी वन

उष्ण धौक वन

उष्ण मरुद्भिद वन

उष्ण मरुद्भिद वन -
6%



उष्ण धौक वन - 58%

शुष्क मानसूनी वन 28%

उपोष्ण सदावहार वन 1%

उष्ण सागवान वन 7%

1. उपोष्ण सदाबहार वन/ उपोष्ण पर्वतीय वन-

- वर्षा- इन वनों में वर्षा की आवश्यकता 150 cm है।
- क्षेत्र - इन वनों का योगदान राजस्थान के कुल भौगोलिक वनों का 1% है।
- विस्तार- मुख्यतः माउंट आबू (सिरोही) में
- वृक्ष/ घास- डिक्लिपटेरा आबू रंसिस/ अम्बरतरी
बाँस
जामुन
- महत्व/ विशेषता- इन वनों में जैव विविधता अधिक पाई जाती है।

2. उष्ण सागवान वन-

- वर्षा- इन वनों में वर्षा की आवश्यकता 75-110 cm होती है।
- क्षेत्र - इन वनों का योगदान राजस्थान के कुल भौगोलिक वनों का 7% है।
- विस्तार- यह वन मुख्यतः वागड़ (डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़) व हाड़ौती (कोटा, बारां, जालावाड़) क्षेत्र में पाए जाते हैं।
- वृक्ष - सागवान, गूलर, महुआ, तेंदु (SONAT)
- महत्व- यह वन औद्योगिक क्षेत्र में अधिक उपयोगी है।

3. उष्ण शुष्क मानसूनी / पतझड़ वन-

- वर्षा- इन वनों में वर्षा की आवश्यकता 50-80 cm होती है।
- क्षे. - कुल भौगोलिक वनों का 28% हिस्सा।

↪ **विस्तार-** मेवाड़ क्षेत्र व मैदानी क्षेत्र (अलवर, भरतपुर, करौली, धौलपुर)
↪ राजसमन्द, उदयपुर, भीलवाड़ा, चित्तौड़

↪ **वृक्ष** - साल, सागवान, शशिम, रोजवुड, खैर, पलारा, आम, चंदन

↪ **विशेषता-** फर्नीचर उद्योग में सर्वाधिक उपयोग ।

NOTE- रोहिड़ों को राजस्थान में मरु सागवान (मरुटीक) कहा जाता है।

4. उष्ण धीक वन-

↪ **वर्षा-** इन वनों में वर्षा की आवश्यकता 30-60 cm होती है।

↪ **क्षेत्र-** कुल भौगोलिक वनों का 58% भाग ।

↪ **विस्तार-** अर्द्धशुष्क मरुस्थल, अरावली क्षेत्र, स. माधोपुर, करौली

↪ **वृक्ष** - खेजड़ी, रोहिड़ा, बबूल, कैर, बेर, धीक

↪ **महत्व** - यह वन ईंधन की लकड़ी के रूप में उपयोगी है।

5. उष्ण कंटीले वन / मरुद्भिद वन / जीरोफाइट्स वन-

↪ **वर्षा-** इन वनों में वर्षा की आवश्यकता 0-30 cm होती है।

↪ **क्षेत्र-** कुल भौगोलिक वनों का 6% है।

↪ **विस्तार-** जैसलमेर, बीकानेर, बाड़मेर, जोधपुर

↪ **वृक्ष** - कंटीली झाड़ियाँ, कैक्टस, डंडा थोर

↪ **महत्व** - यह वन मरुस्थलीकरण को रोकते है।

➤ प्रमुख वन सम्पदा एवं घास

1. खैजड़ी → (प्रोसोपिस सिनेरेरिया)

➤ सर्वाधिक पश्चिमी राजस्थान में (सर्वाधिक - जोधपुर)

➤ अन्य नाम - राज्य वृक्ष (1983 ई.) / राज्य का गौरव / शमी वृक्ष / राज्य का कल्पवृक्ष / जांटी (स्थानीय भाषा में)

NOTE - विजयादशी / दशहरा के अवसर पर खैजड़ी की पूजा की जाती है।
• गौवाजी के शान/मन्दिर खैजड़ी के नीचे स्थापित किए जाते हैं।

2. रोहिड़ा → (टीकोमेला अंडूलेटा)

➤ सर्वाधिक पश्चिमी राजस्थान में (सर्वाधिक - जोधपुर)

➤ अन्य नाम - राज्य पुष्प (1983 ई.) "मरुस्थल का सागवान"

3. महुआ → (महुका लैंगिफीलिया)

➤ सर्वाधिक - डूंगरपुर

➤ "आदिवासियों का कल्पवृक्ष"

➤ उपयोग - शराब बनाने में (फूलों से), औषधि बनाने में (छाल से)

↪ फर्नीचर बनाने में उपयोगी

4. पलारा / दाक / खाखरा → (ब्युटिया मोनोस्पर्मा)

➤ सर्वाधिक अरावली क्षेत्र में - राजसमंद, अजमेर एवं अलवर

➤ इसे 'जंगल की ज्वाला' कहते हैं।

➤ इसके फूलों से 'प्राकृतिक रंग' बनाया जाता है।

5. डिक्लिप्टेरा आबू ऐसिंस (अम्बरतरी) -

यह एक औषधीय पादप है जो विश्व में केवल माउंट आबू में पाया जाता है।

6. खैर →

↳ सर्वाधिक - उदयपुर, चित्तौड़गढ़

↳ कछौड़ी जनजाति द्वारा इस वृक्ष की छाल से 'कच्चा' तैयार किया जाता है।

7. शहदूत →

↳ सर्वाधिक - उदयपुर

↳ इस वृक्ष पर रेशमकीट से रेशम उत्पादित किया जाता है।

↳ "रेशमकीट पालन - सैरीकल्चर"

8. तेंदू →

↳ सर्वाधिक - प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़ एवं हाड़ौती

↳ इसकी पत्तियों का उपयोग बीड़ी बनाने में किया जाता है।

↳ 'लिमरू' → तेंदू फल को 'लिमरू' कहा जाता है।

↳ 1974 में तेंदू पेड़ का राष्ट्रीयकरण किया गया।

9. जामुन -

↳ सर्वाधिक - माउंट आबू, सिरोंही, अजमेर

↳ मधुमेह के उपचार में उपयोगी

10. सागवान - (वैज्ञानिक नाम - टिकलैना ग्रैंडिस)

↳ सर्वाधिक - बांसवाड़ा

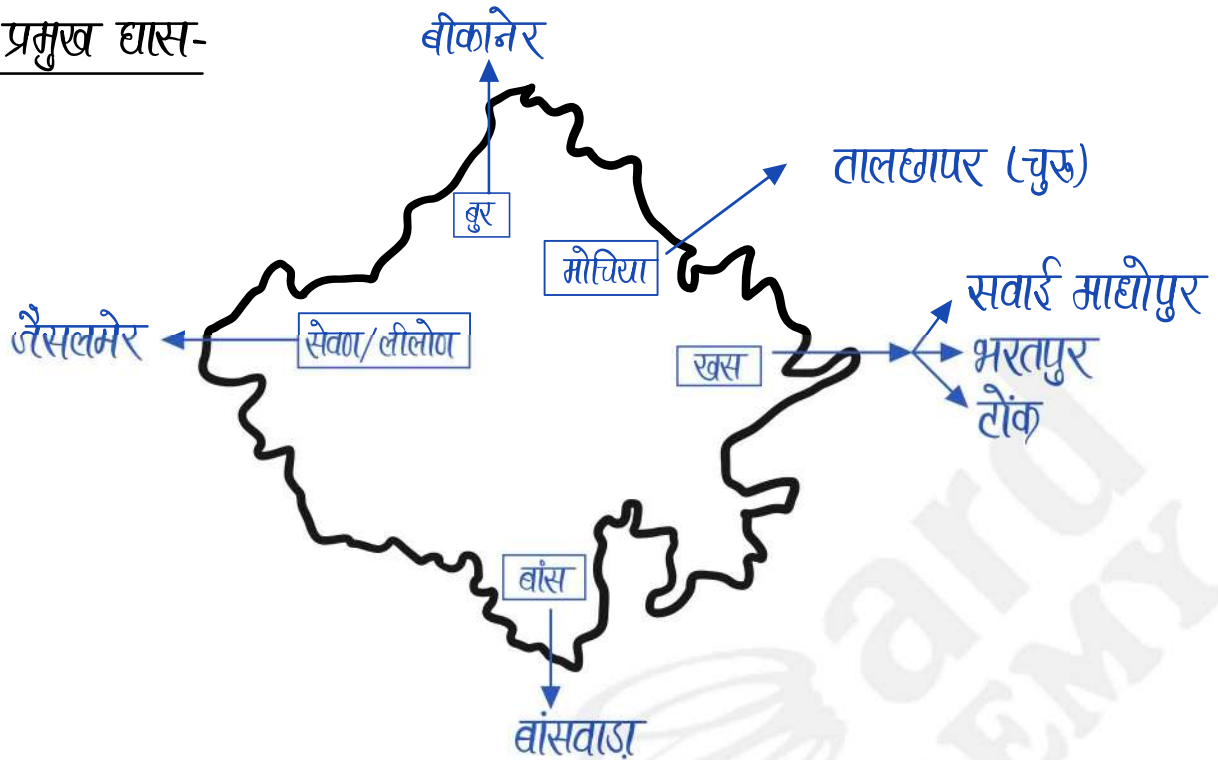
↳ इसकी लकड़ी का उपयोग मुख्यतः फर्नीचर बनाने में किया जाता है।

11. साल/सालर -

मुख्यतः अरावली क्षेत्र (अलवर, अजमेर, राजसमंद एवं सिरोंही) में पाया जाता है।

इन वनों का विस्तार 450 मीटर से अधिक ऊँचाई वाले क्षेत्रों में होता है।

प्रमुख घास-



(i) सैवण / लीलोण-

- वैज्ञानिक नाम- लेसियुरस सिंडिका
- सर्वाधिक - जैसलमेर (लाठी सीरीज क्षेत्र में)
- दूधारु पशुओं के चारे के रूप में उपयोगी।
- इसे गौडावण की शरास्थली भी कहा जाता है।

(ii) धामण →

वैज्ञानिक नाम- सैल्क्स सेटीजेस्स

सर्वाधिक - जैसलमेर

दूधारु पशुओं के चारे के रूप में उपयोगी।

(iii) बांस →

वैज्ञानिक नाम- बम्बुसा वल्गारिस

सर्वाधिक - बांसवाड़ा

यह सर्वाधिक लम्बी घास होती है जिसे "आदिवासियों का हरा सोना"/ "आदिवासियों की रीमरती लकड़ी" कहा जाता है।

(iv) खस→

सर्वाधिक - सवाई माधोपुर, भरतपुर, अजमेर एवं टींक

यह सुगंधित घास है जो शरबत बनाने एवं इत्र बनाने में उपयोगी होती है।

(v) बुर→

सर्वाधिक - बीकानेर

यह सुगंधित घास है।

राजस्थान में अन्य घासों-

अंजन, करड़, भरुट

(vi) मोचिया घास→

सर्वाधिक - चुरु (तालछापर अभ्यारण)

E. वृक्षारोपण कार्यक्रम

1. मरुस्थल वृक्षारोपण कार्यक्रम→

↳ शुरुआत- 1977-78

↳ जिले - 10

↳ वित्तीय भागीदारी - केन्द्र : राज्य = 75:25

NOTE:- मरुस्थल विकास कार्यक्रम (MDP)

• शुरु-1977-78

• जिले - 16

• वित्तीय सहयोग - केन्द्र:राज्य - 75:25

2. ऑपरेशन खैजड़ी→

↳ शुरुआत- 1991

↳ उद्देश्य - मरुस्थलीकरण को रोकना ।

3. अरावली वृक्षारोपण योजना- (सहयोग- जापान)

↳ शुरुआत- 1992 (8 वर्ष, 1992- 2000)

➤ 10 जिले शामिल- अलवर, जयपुर, सीकर, झुंझुनूं, नागौर, पाली, सिरोही, उदयपुर, चित्तौड़ एवं बांसवाड़ा।

4. राज्य वानिकी क्रियान्वहन योजना-

➤ 1996 से 2016 (20 वषीय कार्यक्रम)

➤ उद्देश्य - राज्य में वानिकी को बढ़ावा।

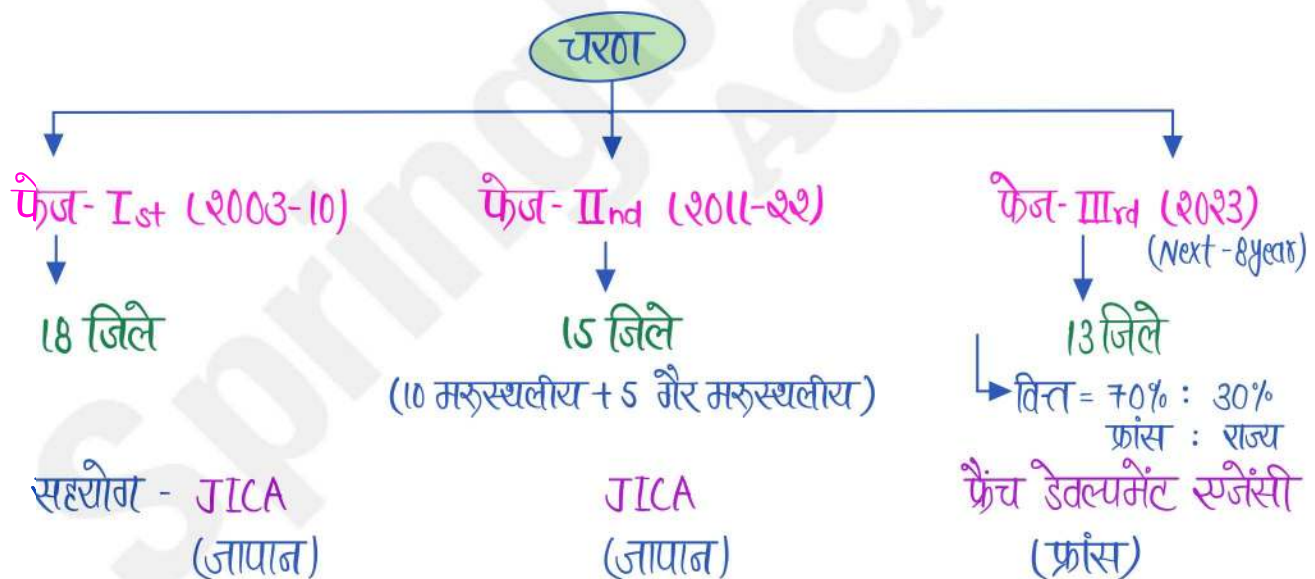
5. राज्य वानिकी एवं जैव विविधता कार्यक्रम-

➤ शुरुआत - 2003

➤ उद्देश्य- • वनों एवं जैव विविधता को बढ़ाना।

• मिट्टी एवं भू-जल संरक्षण

• तारीवी उन्मूलन एवं आजीविका कार्यक्रम



JICA → Japan International Cooperation Agency

नोट :- फेज-II_{nd} के गैर-मरुस्थलीय जिलों में जयपुर, सिरोही, बांसवाड़ा, डूंगरपुर एवं भीलवाड़ा शामिल थे।

6. हरित राजस्थान कार्यक्रम- (२००९-२०१५)

↳ यह वृक्षारोपण की एक पंचवर्षीय योजना है।

7. वन धन योजना- (राज्य सरकार)

↳ 12 Aug., 2015 से शुरू।

↳ उद्देश्य- वन क्षेत्रों के निकट रहने वाले लोगों के विकास एवं उनकी वनों पर निर्भरता कम करने व रोजगार उपलब्ध करवाना।

8. वन धन विकास योजना (केंद्र सरकार) →

↳ शुरुआत- 14 अप्रैल, 2018

↳ उद्देश्य- गैर लकड़ी आधारित उत्पादों द्वारा आदिवासियों की आय बढ़ाना।

9. घर- घर औषधि योजना-

↳ शुरुआत- 1 अगस्त 2021 (2021 से 2026)

↳ उद्देश्य- • रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाना।
• औषधीय पौधों को बढ़ाना।

Note- इस योजना में 4 पौधों को शामिल किया गया है-

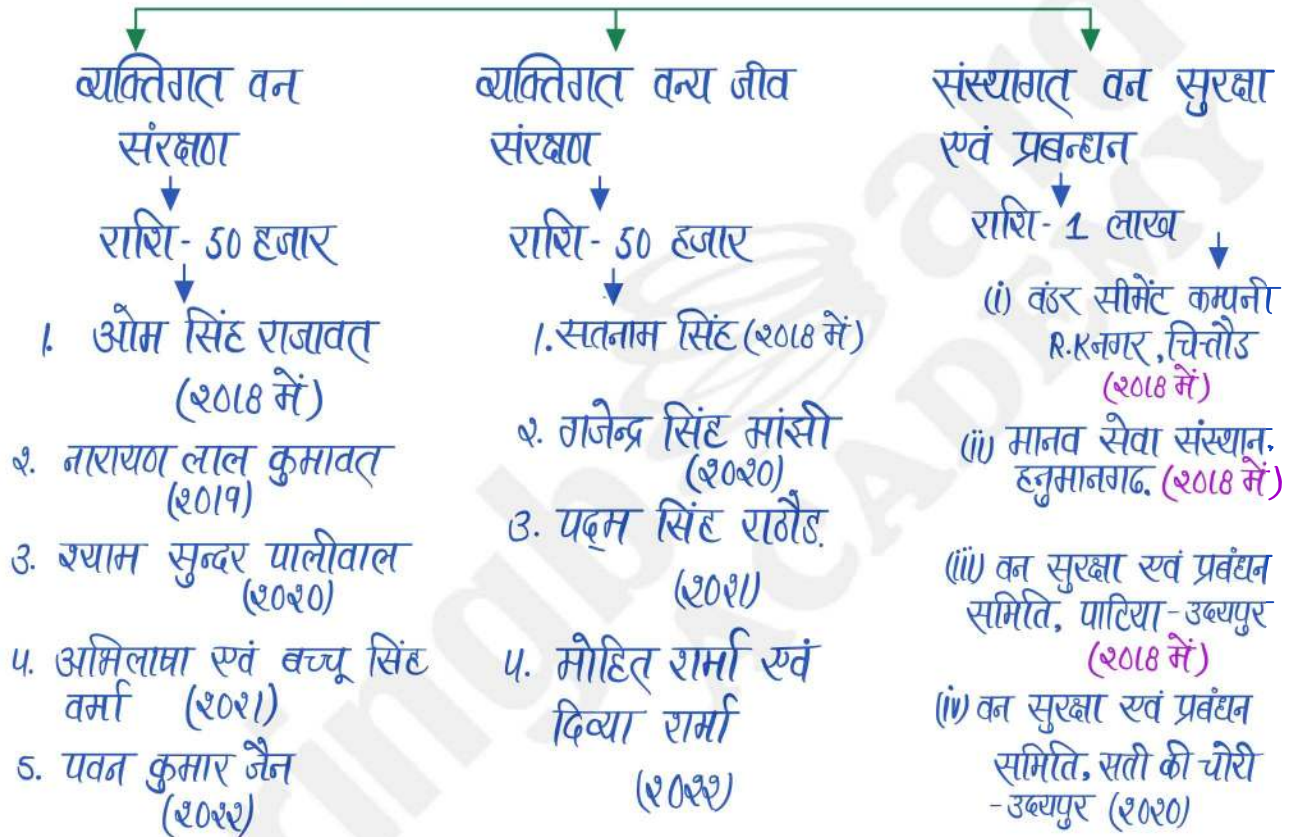
तुलसी, अखंडा, कालमैथ, गिलोय

F. वन संरक्षण पुरस्कार

1. अमृता देवी बिरनोई पुरस्कार- प्रारम्भ- 1994

उद्देश्य- • वृक्षारोपण • वन संरक्षण • वन्य जीव संरक्षण

यह पुरस्कार तीन स्तर पर दिया जाता है



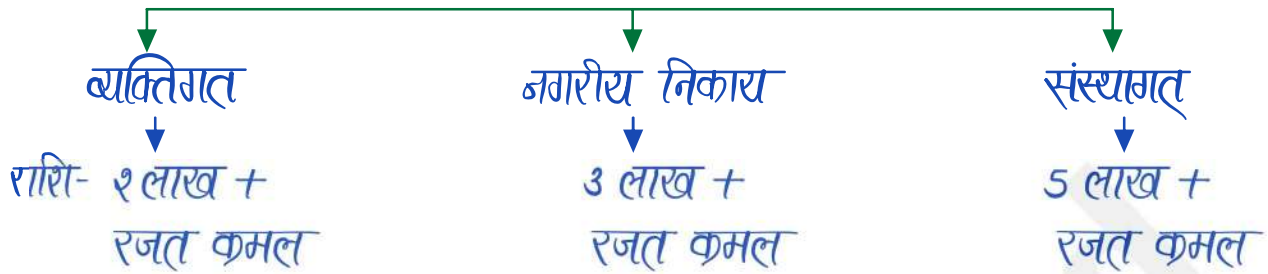
२. इंदिरा प्रियदर्शिनी वृक्ष मित्र पुरस्कार- (शुरुआत-1986)

यह पुरस्कार भारत सरकार के पर्यावरण और वन मंत्रालय द्वारा उन व्यक्तियों और संस्थानों को दिया जाता है, जिन्होंने वनीकरण और वनर भूमि विकास के क्षेत्र में अमूल्य और अनुकरणीय कार्य किया है।

राशि- ₹. 50,000 रु.

3. राजीव गांधी पर्यावरण संरक्षण पुरस्कार - शुरुआत - १९८१ (५ जून)

यह पुरस्कार तीन स्तर पर दिया जाता है



4. कैलश सांखला वन्यजीव संरक्षण पुरस्कार - (शुरुआत - १९८०)

राशि- 50,000 रुपये (वन्य जीवों की सुरक्षा हेतु)

5. वनपालक पुरस्कार - यह पुरस्कार सरकारी विभाग में कार्य करने वाले वन रक्षक और वन विभाग के कर्मचारियों को दिया जाता है।

6. वनस्पति एवं वन्य जीवों के संरक्षण संबंधी अधिनियम एवं परियोजनाएँ

- वन्य जीव संरक्षण अधिनियम - 197२
- वाघ संरक्षण परियोजना - 1973
- मगरमच्छ संरक्षण परियोजना - 1975
- वन संरक्षण अधिनियम - 1980 (संशोधित - 1988)
- पर्यावरण संरक्षण अधिनियम - 1986
- हाथी संरक्षण परियोजना - 1992
- जैव विविधता संरक्षण अधिनियम - १९८९ (नियम - १९८०)
- डॉल्फिन संरक्षण अधिनियम - १९८९

↳ गंगोत्र डॉल्फिन को राष्ट्रीय जलीय जीव का दर्जा २०१० में दिया गया।

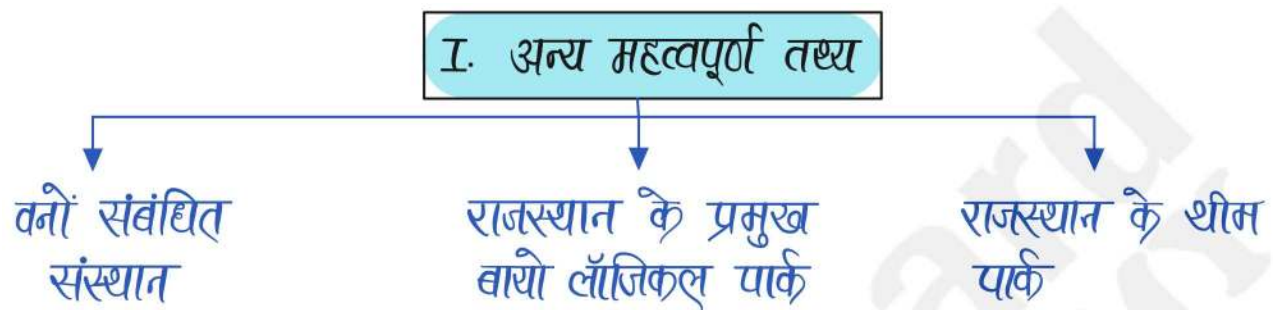
M. प्रमुख दिवस

- १४ जनवरी, ३१ जनवरी → जीव जंतु पखवाड़ा
- १ फरवरी → रामसर/ विश्व आर्द्रभूमि दिवस
- ११ मार्च → विश्व वानिकी दिवस
- २२ मार्च → जल दिवस
- २२ अप्रैल → पृथ्वी दिवस
- २२ मई → जैव विविधता दिवस
- ५ जून → विश्व पर्यावरण दिवस
- १ जुलाई- ७ जुलाई → वन महोत्सव एवं वन सप्ताह
(राजस्थान में राज्य वन महोत्सव - १२ सितम्बर)
- १६ सितम्बर → ओजोन दिवस
- १ अक्टूबर से ७ अक्टूबर → वन्य जीव सप्ताह

सीम - २०२५

- १ फरवरी → Wetlands and Human Wellbeing
- ११ मार्च → Forest and Innovation
- २२ मार्च → Water for Peace
- २२ अप्रैल → Planet v/s Plastics
- २२ मई → Build Back Biodiversity : From Agreement to action.

- 5 जून → Land restoration, desertification and drought Resilience
- 16 सितम्बर → Ozone for Life



(a) वनों के संबंधित संस्थान-

1. काजरी (CAZRI- Central Arid Zone Research Institute)-

↳ स्थापना - 1959, जोधपुर

↳ 5 उपकेन्द्र- बीकानेर, जैसलमेर, पाली, भुज (कच्छ-गुजरात) व लेह (लद्दाख)

2. आफरी (AFRI- Arid forest Research Institute)

स्थापना- 1987, जोधपुर

3. राजस्थान राज्य जैव विविधता बोर्ड-

↳ गठन 14 सितम्बर, 2010 (जयपुर)

(b) राजस्थान के प्रमुख वायो लॉजिकल पार्क (जैविक उद्यान) - (4)

1. सज्जनगढ़ → उदयपुर

2. माचिया सफारी → जोधपुर

3. नाहरगढ़ → जयपुर

4. अम्भेड़ा → कोटा (नांता)

NOTE - मरुधरा

→ बीकानेर (बीछवाल) - निर्माणाधीन

(C) राजस्थान के थीम पार्क-

- | | |
|---------------------------------|-----------------------------|
| 1. प्रकृति पार्क | → चुरु, लक्ष्मणागढ़ (सीकर) |
| २. कैक्टस गार्डन | → कुलधरा (जैसलमेर) |
| 3. बटरफ्लार्ड पार्क | → उदयपुर (प्रस्तावित-अजमेर) |
| 4. बौगनवेलिया थीम | → उदयपुर एवं जयपुर |
| 5. जैव विविधता पार्क | → गमधरा (उदयपुर) |
| 6. फिशनबाग जयपुर के धौरे | → जयपुर |
| 7. सिली पार्क एवं फाउंटेन पार्क | → जयपुर (मानसरोवर) |
| 8. संविधान पार्क | → जयपुर |
| 9. ऑक्सोजन पार्क | → कोटा |

NOTE :- ★ Monkey Vally of Rajasthan - गलता जी (जयपुर)

★ बटरफ्लार्ड वैली - कुलिश स्मृति वन (जयपुर)